16

यीशु का जी उठना

मत्ती 28; मरकुस 16;
लूका 24; यूहन्ना 20; 21

''स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो: मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो। वह यहां नहीं है, परन्तु... जी उठा है;... शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है;...'' (मत्ती 28:5-7)।

रविवार को कब्र खाली थी। स्वर्गदूत ने पूछा, ''तुम जीवते को मरे हुओं में क्यों ढूंढ़ते हो? वह यहां नहीं, परन्तु जी उठा है'' (लूका 24:5, 6)। यदि कब्र खाली न होती तो संसार को कभी भी यीशु के बारे में सुनने का मौका न मिलता। यीशु का जी उठना ही वह सबसे बड़ा अन्तर है, जो मसीहियत को दूसरे धर्मों से अलग करता है!

यीशु में न तो जान डाली गई थी, न उसका दोबारा जन्म हुआ था और न ही नए सिरे से उसे बनाया गया था, बल्कि वह जी उठा था। वह ''मृत्यु में से जाकर एक नए संसार में गया, जो नई और मृत्यु रहित सृष्टि है, थोड़े बहुत कायापल्ट के बावजूद वह शारीरिक ही था।''[1] मसीहियत का यह दावा है कि यीशु के साथ कुछ ऐसा हुआ जो इतिहास में किसी दूसरे के साथ नहीं हुआ था। हमारा भरोसा केवल आत्मा के अमर रहने पर नहीं, बल्कि हमारी देहों के जी उठने और बदल जाने में है।

अधिकतर धर्मों में धर्म-स्थान माने जाते हैं, परन्तु मसीहियत का कोई धर्म स्थल नहीं है। अन्य धर्मों में कब्रें भी होती हैं, परन्तु मसीहियत में नहीं। ''मुर्दा मुक्तिदाता किस काम का है?''

किसी ने जी उठने की गवाही नहीं दी। वहां कौन था? क्या परमेश्वर वहां था? परमेश्वर ने यीशु को जिलाया।[2] क्या पवित्र आत्मा वहां था? पौलुस ने कहा कि आत्मा ने यीशु को जिलाया (रोमियों 8:10, 11)। क्या स्वर्गदूत वहां थे? हमें नहीं पता। मनुष्य तो वहां नहीं था। खाली कब्र के कारण मसीही लोग यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानते हैं! अगर यीशु के शरीर की एक भी हड्डी मिल जाती तो मसीहियत पूरी तरह खत्म हो जाती। पौलुस ने कहा ''मैं उसको और उसके मृत्युंज्य की सामर्थ को और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं'' (फिलिप्पियों 3:10)। यीशु शारीरिक रूप से मरा और जी भी उठा। इसका अर्थ यह है कि उस पर विश्वास करके आज हम उसकी बात मान सकते हैं। सुसमाचार का संदेश यही है: मसीही भरोसा, मृत्यु के बाद जीवन ही नहीं, बल्कि जीवन है। उसने कहा, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं ...'' (यूहन्ना 11:25, 26); ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; ...''(यूहन्ना 14:6)।

बिना पुनरुत्थान के जी उठना व्यर्थ है। यीशु झूठा, फरेबी या धोखेबाज नहीं है। क्रूस कोई

कल्पना नहीं है, न यह मिथ्या या रूपक है। उसकी मृत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना वास्तव में हुआ। यीशु ऐतिहासिक है। मसीही लोग किसी कब्र को इसलिए नहीं मानते, क्योंकि यीशु की कब्र खाली थी। किसी ने इस बात से इनकार नहीं किया कि उसकी कब्र खाली थी!

गाड़ा जाना

शैतान ने यदि नरक में कभी जश्न मनाया होगा तो वह अवश्य उस फसह के सब्त वाले दिन होगा, जब यीशु मरा हुआ था। यीशु के जी उठने के साथ ही शैतान की मौज-मस्ती खत्म हो गई और हमेशा-हमेशा के लिए सारे संसार में स्वर्गीय आनन्द दे दिया गया।

सुसमाचार का संदेश यीशु की मृत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना है (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। मौत तथा जी उठने की बात करके हमें गाड़े जाने को भूलना नहीं चाहिए। गाड़े जाने के लिए मुत्यु होनी आवश्यक है। नास्तिक लोग मनगढंत कहानियां बनाते हैं कि यीशु मूर्छित हो गया था तथा उसने अधिकारियों को चकमा दिया था। स्वर्गदूतों ने उस ओर ध्यान दिलाया, जहां यीशु का शव रखा गया था (मत्ती 28:6; मरकुस 16:6)। जी उठने के लिए मौत तथा गाड़ा जाना ज़रूरी था। दफनाए जाने के लिए शव जरूरी था।

गाड़ा जाना, पुकार उठता, ''सब कुछ खत्म हो गया। मौत जीत गई और जिंदगी हार गई।'' शायद शुक्रवार को हालात कुछ ऐसे ही लग रहे हों, परन्तु जी उठना रविवार के दिन हुआ!

यीशु का, ''पहले से योजनाबद्ध जनाज़ा'' नहीं हुआ, न उसके परिवार में से और न उसके चेलों में से किसी ने उसे दफ़नाया। परमेश्वर के प्रबन्ध पर चकित होना आवश्यक है। यीशु मरा तो एक कंगाल की मौत पर दफ़नाया एक राजा की तरह। अरिमतिया के युसूफ और निकुदेमुस ने कुछ स्त्रियों की सहायता से यीशु के शव को मलमल में लपेट कर और कीमती मसाले लगाकर एक नई कब्र में दफ़ना दिया था (मत्ती 27:57-61; मरकुस 15:42-47; लूका 23:50-56; यूहन्ना 19:38-42)। परमेश्वर अपने लोगों को संभालता है!

गाड़ा उसे ही जाता है, जो मर गया हो। पिलातुस, यूसुफ, निकुदेमुस तथा औरतों को पता था कि यीशु मर चुका है। यीशु की सबसे बुनियादी और मानने योग्य बात, उसकी मृत्यु है।

तीन दिन

रविवार अर्थात् यीशु के जी उठने के दिन के पीछे की ओर तीन दिन गिनते हुए कुछ लोग यह हिसाब लगाते हैं कि यीशु बुधवार के दिन क्रूस पर चढ़ाया गया था। सप्ताह के इतना पीछे जाने के साथ सुसमाचार की पुस्तकों में लिखी यीशु की अन्तिम गतिविधियों के मध्य में हस्तक्षेप होता है। वीरवार को क्रूस पर चढ़ाए जाने की शिक्षा भी इस मामले को हल करने के बजाय और गंभीर कर देती है। बाइबल बताती है कि वह ''तीसरे दिन'' जी उठा था न कि ''चौथे दिन'' या ''पांचवें दिन।'' सदियों से उसकी मृत्यु के दिन के रूप में शुक्रवार को ही माना जाता रहा है। कई तो इसे ''धन्य शुक्रवार'' या ''मुबारक जुम्मा'' भी कहते हैं।

यीशु ने योना के सम्बन्ध में तीन दिन और तीन रात की बात की है (मत्ती 12:40), परन्तु यह सांकेतिक लगता है न कि शाब्दिक। अगर उसने कब्र में तीन दिन और तीन रातें काटी तो जी उठना ''पांचवें दिन'' हुआ होगा। यहूदी गणना के अनुसार शुक्रवार से रविवार तक तीन दिन बनते हैं।

यहूदी अगुओं को इस बात का पता था (मत्ती 27:63)। उन्होंने पिलातुस को कार्रवाई करने के लिए कहा, क्योंकि उनहें पता था कि यीशु के कहने का क्या अर्थ है। प्रेरितों को यह बात उसके जी उठने के बाद ध्यान में आई (लूका 24:8; यूहन्ना 2:18-22)। तब उन्हें समझ आया कि यीशु के कहने का क्या अर्थ था।

उस विनम्र यीशु के विपरीत, जिसकी तस्वीर हमनें अपने मनों में बनाई हुई है, यीशु ने हेरोदेस के बारे में बड़ी कठोरता से कहा: ''जाकर उस लोमड़ी से कह दो कि देख, मैं आज और कल दुष्टात्माओं को निकालता और बीमारों को चंगा करता हूं और *तीसरे दिन* अपना कार्य पूरा करूंगा'' (लूका 13:32)। उसने सचमुच तीसरे दिन अर्थात रविवार वाले दिन मुर्दों में से जी उठ कर अपना लक्ष्य पा लिया था।

जी उठने के ठोस प्रमाण

''उसने दुख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा: और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा'' (प्रेरितों 1:3)। मसीहियत ठोस और भरोसेमंद प्रमाण के आधार पर बनी है। यदि यीशु अपनी मुत्यु का कुछ न कर सका, तो चाहे वह और जो कुछ भी कर ले, उसका कुछ भी मूल्य न होगा। प्रेरितों के काम की पुस्तक जी उठने पर बहस नहीं करती, बल्कि उसकी घोषणा करती है। मुर्दा मुक्तिदाता से मसीहियत नहीं बनी है। लीमैन ऐब्बट ने कहा, ''यीशु का जी उठना इतिहास का सबसे बेहतरीन प्रमाणित तथ्य है।''[3]

यहूदी कानून ने परिस्थितियों के प्रमाण को नहीं माना था। फैसले दो या तीन गवाहों के आधार पर किए गए थे (2 कुरिन्थियों 13:1)। परमेश्वर ने वचन में गवाहियों को काफी स्थान दिया। जी उठना किसी भी अदालत में झुठलाया नहीं जाएगा।

(1) *शत्रु* विरोधाभास ही है कि जिन चेलों को विश्वास करना चाहिए था, उन्हीं ने संदेश पर पर शक किया, जबकि जिन शत्रुओं को संदेह करना चाहिए था, उन्होंने विश्वास किया। उन्होंने पिलातुस को सावधान किया कि यीशु ने वचन दिया था कि वह तीन दिनों में जी उठेगा। पिलातुस ने कहा, ''... अपनी समझ के अनुसार [कब्र की] रखवाली करो'' (मत्ती 27:65)। क्रब के सामने एक बड़ा पत्थर रखकर उस पर मोहर लगा दी गई। सिपाहियों को उस कब्र की पहरेदारी के लिए बिठा दिया गया। कोई मनुष्य उसमें से शव नहीं निकाल सकता था।

जब स्त्रियां ने उस पत्थर को एक ओर लुढ़का हुआ और कब्र को खाली देखा तो किसी ने शोर नहीं मचाया कि, ''उस लाश को ढूंढ़ो।'' कोई शव की खोज में घर-घर नहीं गया। यीशु के दुश्मनों को पता था कि शव नहीं मिलेगा, कब्र पर रखा पत्थर यीशु के निकलने के लिए नहीं, बल्कि मनुष्य के अन्दर आने के लिए हटाया गया था। यहूदी अगुवे, फरीसी, रोमी सिपाही, पिलातुस और हेरोदेस लाचार थे। उन्हें मालूम था कि यीशु जी उठा है। उन्होंने तुरन्त इस समाचार को दबाने की कोशिश की।

पूरे इतिहास में किसी को यीशु का शव नहीं मिला है। यह खामोशी थिरका देने वाली है! किसी मनुष्य का शव बिना कोई निशान छोड़े गायब हो जाना अपने आप में एक बड़ा अजूबा है। सुसमाचार का पहला संदेश सुनाने के समय (प्ररितों 2) पतरस उस कब्रिस्तान के बिल्कुल ही पास

था। तीन हज़ार लोगों ने उसके संदेश को माना। उसने उन्हें बताया, ''सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को, जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी'' (प्रेरितों 2:36)। नास्तिकों के पास इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं है कि ''उस देह का क्या हुआ?''

(2) *स्त्रियां।* जी उठा यीशु सबसे पहले मरियम मगदलीनी को दिखाई दिया (मरकुस 16:9; यूहन्ना 20:1-18)। स्त्रियां कब्र पर आईं, इसलिए उनकी तारीफ करें! यह अहसास होने पर उन्होंने जी उठने की कल्पना करने की हिम्मत नहीं की थी, उनकी गवाही और भी पक्की हो जाती है। जब वे प्रेरितों से मिलीं तो प्रेरित उन तीनों पर हंसे और विश्वास करने से इनकार कर दिया (मरकुस 16:10, 11; लूका 24:11)। यीशु ने इस कारण चेलों को डांटा (मरकुस 16:14)। वह मृत देह को ढूंढ़ने के लिए इतनी अधिक कोशिश में थे कि उन्होंने जीवित मुक्तिदाता को पहचाना ही नहीं।

(3) *यूहन्ना।* यूहन्ना कब्र पर आकर रुक गया और उसके पीछे-पीछे पतरस अन्दर तक चलता गया। उसने कफ़न को देख कर सब सबूत इकट्ठे किए। उसने देखा और विश्वास किया (यूहन्ना 20:2-8)।

(4) *प्रेरित।* जो कायर थे, वे शहीद बन गए! इसका क्या कारण हो सकता है? जी उठना! मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना और पतरस और पौलुस समक्ष गवाह थे। आप उन सभी को झूठा कहेंगे? क्या आप बाइबल में दिए सुसमाचार के वृत्तांतों पर भरोसा कर सकते हैं? विद्वान लोग लूका को अव्वल दर्जे का इतिहासकार मानते हैं। आप अब आरम्भिक कलीसिया की शुरुआत बढ़ने तथा बने रहने का क्या कारण बता सकते हैं? यह सब जी उठने के कारण ही हुआ।

(5) *''शकी'' थोमा।* थोमा यीशु की मृत्यु के कारण परेशान हो गया था। उसे पहले वाली संगति नहीं मिल रही थी (देखें यूहन्ना 20:24-29)। यह असफलता उसकी जान के लिए खतरनाक हो सकती थी। चेले उसके पीछे गए। हमें आज यह सीखकर इसे व्यवहार में लाना चाहिए (गलातियों 6:1, 2; याकूब 5:19, 20; यहूदा 22, 23)। अगली बार वह वहीं था। उसके साथ अधिक कठोर न हो। क्या आप ने कभी किसी जी उठे व्यक्ति को देखा है। क्या आप किसी ऐसे दावे को मान लेंगे? थोमा ने ''उंगलियों के टैस्ट'' की मांग की। यीशु ने इसका स्वागत किया। थोमा पुकार उठा, ''हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!''

(6) *पौलुस प्रेरित।* सौलुस (पौलुस) का बाद का मन परिवर्तन जी उठने को सिद्ध करने के लिए काफी है। प्रेरितों 9 तथा 22 अध्याय में उसकी कहानियां पढ़ें। जो अत्याचारी था, वह प्रचारक बन गया! क्यों? उसने जी उठे उद्धारकर्ता को देखा था (1 कुरिन्थियों 9:1; 15:8)। उसे कोई संदेह नहीं था। वह उसके विश्वास तथा उसके प्रचार के लिए मरा। पौलुस का विश्वास शारीरिक जी उठने में था और वह उसी का प्रचार करता था।

(7) *दर्शन।* अधिकतर विद्वान जी उठने के दस दर्शन बताते हैं, जबकि कई बारह बताते हैं:

- मरियम मगदलीनी को (मरकुस 16:9-11; देखें यूहन्ना 20:1-18)
- और दूसरी स्त्रियां को (मत्ती 28:1-10)
- शमौन पतरस को (लूका 24:34)
- इम्माउस के मार्ग पर जाने वाले दो जनों को (लूका 24:13-32; देखें मरकुस 16:12)

- दस चेलों को, जिनमें थोमा नहीं था (यूहन्ना 20:19-25; देखें मरकुस 16:14; लूका 24:36-49)
- ग्यारह चेलों को थोमा के साथ (यूहन्ना 20:26-29)
- गलील की झील पर, सात चेलों को (यूहन्ना 21:1-23)
- गलील में ग्यारह चेलों को (मत्ती 28:16-20; देखें मरकुस 16:15-18)
- पांच सौ से ऊपर भाइयों को (1 कुरिन्थियों 15:6)
- याकूब को (1 कुरिन्थियों 15:7)
- ग्यारह चेलों को (लूका 24:50-53)
- पौलुस को (1 कुरिन्थिन्यों 15:8; देखें प्रेरितों 9; 26)।

ध्यान दें कि यीशु अपने शत्रुओं अर्थात धार्मिक यहूदियों, पिलातुस या हेरोदेस को दिखाई नहीं दिया। वह अपने चेलों को ही दिखाई दिया।

गवाहों ने ही बताया है!

व्यंग्यात्मक घटनाएं

बाइबल एक आकर्षित करने वाली पुस्तक है। मनुष्य जाति इसे नहीं लिख सकती। यदि हम इसे लिख भी सकते तो भी नहीं लिखते। यह तथ्य परमेश्वर की प्रेरणा से होने का एक ज़बर्दस्त तर्क है।

(1) *औरतें।* स्वर्गदूत तथा यीशु सबसे पहले स्त्रियों को ही दिखाई दिए थे। स्त्रियां मसाले लेकर आई थीं। यह एक अच्छा संकेत था, पर व्यावहारिक नहीं। फिर उनके मन में आया कि उस पत्थर को कौन हटाएगा? कई ताकतवर आदमियों की जरूरत पड़ सकती थी, परन्तु एक ही स्वर्गदूत ने इस पत्थर को हटा दिया!

(2) *सिपाही।* कब्र की रखवाली कर रहे सिपाहियों की टोली से बढ़कर हास्यास्पद कोई और बात हो सकती है? वहां भूकम्प आया था और उसके बाद भी स्वर्गदूत ने उस पत्थर को खिसकाया था (मत्ती 28:2)। पहरेदार मुर्दे की तरह हो गए थे। क्या उनको डांटा गया था। क्या उनको आज्ञा दी गई थी कि, ''उस शव को ढूंढ़ो।'' नहीं! प्रधान याजकों को यह कहने के लिए कि वे सो गए थे, काफी घूस दी गई (मत्ती 28:11-15)! सिपाही के ड्यूटी पर सो जाने की कीमत बहुत बड़ी होती थी, परन्तु इस मामले में किसी को कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ी।

(3) *इम्माउस के रास्ते जाने वाले चेले।* यीशु राह चलते हारे हुए दो चेलों के साथ हो लिया (लूका 24:13-32)। वे हैरान थे कि यीशु को यरूशलेम में होने वाली बात का ''पता नहीं'' था। असल में उन्हें खुद पता नहीं था। *आश्चर्यजनक* ढंग से यीशु पुराने नियम की बातों को इस्तेमाल करके उन्हें सुसमाचार सुना रहा था। उन्होंने यीशु को तब तक नहीं पहचाना, जब तक उसने आशीष देकर रोटी नहीं तोड़ी।

जी उठने की सामर्थ

वही शक्ति, जिसने यीशु को मुर्दों में से जिलाया, पापियों को नया जीवन दे सकती है। यह

नया जीवन मसीह की मौत, दफ़नाए जाने और जी उठने में बपतिस्मा लेने के साथ आरम्भ होता है (रोमियों 6:3-7)। पापी को मिलने वाली सबसे बड़ी आशीष मसीह के साथ तथा मसीह में बपतिस्मा लेने के लिए दफनाया जाना है।

पौलुस ने कहा, ''... मैं उसको और उसके जी उठने की शक्ति को पहचान सकूं'' (देखें फिलिप्पियों 3:7-11)। कलीसिया का दिल और जान भटके हुओं को ढूंढ़ना और बचाना है। यह काम सुसमाचार की शक्ति अर्थात जी उठे प्रभु के संदेश के द्वारा किया जाता है। क्रूस जीती हुई विजय थी, जबकि जी उठना ग्रहण योग्य की गई बलिदानपूर्वक मृत्यु, जिसे परमेश्वर की ओर से मान्यता मिली और पारित किया गया। मृत्यु यीशु को वश में न रख सकी (प्रेरितों 2:22-36)। यीशु ने मृत्यु को हरा कर समाप्त कर दिया (2 तीमुथियुस 1:10)। क्रूस ''मृत्यु'' का चिह्न है। यीशु ने शैतान से मृत्यु की शक्ति छीनकर हमें मृत्यु के ''डंक'' से स्वतन्त्र कर दिया (1 कुरिन्थियों 15:54-57)। पापी मसीह की मृत्यु के द्वारा बचाए जाते हैं न कि उसके जी उठने के साथ।

मृत्यु के द्वारा ह्यीशु हमें पाप और मुत्य की व्यवस्था से बचाता है (रोमियों 8:1, 2)। पाप को जीतना और मृत्यु को खत्म करना है। यीशु अपना लहू लेकर स्वर्ग में प्रकट हुआ (इब्रानियों 10)। वह ''अमरता और जीवन'' ही नहीं, बल्कि ''पुनरुत्थान और जीवन'' भी है (यूहन्ना 11:25, 26)। नरक अविनाशी है। हमारी आत्माएं अविनाशी हैं। यीशु हमेशा का ''पुनरुत्थान'' है! पौलुस ने हमारे बदलने का दावा किया (1 कुरिन्थियों 15:50-58)। अगर यीशु जी नहीं उठा है तो हमारा विश्वास व्यर्थ है (1 कुरिन्थियों 15:12-19)।

यीशु का जी उठना हमारे जी उठने की गारंटी देता है। परमेश्वर ने जो कुछ यरूशलेम के कब्रिस्तान में किया, वही हमारे लिए भी करेगा। हमें मरने के लिए नहीं, बल्कि जीने के लिए बनाया गया था। इस पुनरुत्थान की शिक्षा और आशा क्या है? मेरा जीवन व्यर्थ नहीं है; इसका कोई उद्देश्य है। मेरी असफलताएं मेरा भाग्य नहीं हैं, वे क्षमा कर दी गई हैं। मेरी मृत्यु अन्त नहीं है: उसके बाद पुनरुत्थान होगा। कितनी उत्तम आशा है! हम यीशु के जैसे ही हो जाएंगे। जब वह क्रूस पर था तो शैतान को हराया गया था, पाप पर विजय पाकर जीत प्राप्त की गई थी और मृत्यु का नाश कर दिया गया था। ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है'' (1 कुरिन्थियों 15:57)।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणियां

[1]एन. सी. (टॉम) राइट, *लूक फ़ॉर एवरीवन* (लुइसविल्ले, कैंटकी: वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रैस, 2004), 296-97. [2]देखें प्रेरितों 2:24, 32; 3:15, 26; 4:10; 5:30; 10:40; 13:30, 33, 34; 17:31; रोमियों 10:9; 1 कुरिन्थियों 6:14; 2 कुरिन्थियों 4:14; गलातियों 1:1; इफिसियों 1:20. [3]लीमैन एब्बट, *दि थियोलॉजिकल ऑफ़ ऐन इवोल्यूशनिस्ट* (न्यू: यॉर्क कं., 1925), 129.